कहानी

# संस्कार-हीन

डॉ. श्रीमती कमल चतुर्वेदी

**श्याम** दुबे मास्साब दयालु, ईमानदार, शिक्षा को जीवन की प्राथमिकता मानने वाले, लोकप्रिय शिक्षक तो थे ही साथ ही समाज के वंचित वर्ग को अपनी संवेदना के केन्द्र में भी रखते थे, इसीलिये स्टेशन के उस पार रेल्वे लाइन के समानान्तर कच्ची झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों को कभी-कभी भोजन भी करा देते थे. लोक कल्याणकारी उनकी इन्ही आदतों से उनकी धर्मपत्नी ललिता और बेटा प्रवीण प्रायः नाराज़ ही रहते थे.

एक पिता, एक ईमानदार शिक्षक हमेशा अपने बेटे को संस्कार-वान बनाने का प्रयास करते और उसे समझाते रहते 'बेटा शिक्षा और संस्कार ही तुम्हें एक अच्छा इंसान बना सकते हैं. सभ्य और ईमानदार नागरिक ही देश को ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है. सिद्धान्त और आदर्श ही हमारी संपत्ति है.' प्रवीण बचपन में तो सब सुन लेता था, परन्तु जब बड़ा हो गया तो पिता की बातों को सुनने का समय उसके पास नहीं बचा था.

समय पंख लगाए उड़ चला था. प्रवीण पढ़ा लिखा बेरोज़गार युवक था. उस दिन नौकरी न मिलने के कारण बेहद निराशा और गुस्से से भरे प्रवीण ने अपनी तमाम डिग्रियाँ पिता के आगे पटकते हुए कहा - 'इस शिक्षा से क्या मिला, आपके संस्कारों की बातें सुन-सुन कर मैं बड़ा हुआ हूँ क्या मिला मुझे आपकी व्यर्थ की बातों के बदले में.

श्याम दुबे शांत स्वर में बोले- बेटा मेरी शिक्षा, मेरे संस्कार मात्र नौकरी के लिये ही तो नहीं थे. तुम्हें एक अच्छा इंसान बनाना भी तो मेरा कर्तव्य था.

'हद है पिताजी, सत्य, प्रेम ईमानदारी.......... बस रहने दो अब आप . इनसे आज नौकरी नहीं मिलती- या तो पैसा चाहिये या पहचान- आपके पास कुछ नहीं है, न सिफारिश न..... अब मेरा मुँह मत खुलवाइये मेरे सब दोस्तों की शादी हो गई, नौकरी भी मिल गई और मैं आपके आदर्शों को लटकाए बेकार भटक रहा हूँ........ बेटा, क्या मैं नहीं चाहता, तुम नौकरी करो, तुम्हारी शादी हो, मैं भी दादा बनूँ...... पर मैनें ईमानदारी से मास्टरी की. यह छोटा सा घर और तुम्हारी बहन की शादी भी तो मैं इज्ज़त से कर पाया . तुम्हें भी पढ़ाया . तो भले ही मेरे पास बहुत कुछ नहीं पर संतोष तो है...... और तुममें योग्यता है, तो नौकरी भी आज नहीं तो कल लग ही जाएगी...... धैर्य रखो बेटा.....'

आप ही रखो पिताजी धैर्य, मैं तो अब चला...... मैं बहुत जल्दी प्रभाकर ठेकेदार की लड़की से शादी कर लूँगा - उन्होंने कहा है, वे मुझे ठेके दिलवा देंगे....... . और फिर ससुर की साख पर इतराता प्रवीण वहीं घर जमाई बनकर रहने लगा था.

बेचारे श्याम दुबे उस दिन बेहद दुःखी हुए जब उनका बेटा बड़ी सी कार में अपनी बहुत ही मोटी और कुरुप सी पत्नी को माता-पिता से मिलाने लाया . अपने एकदम गोरे लंबे सुंदर बेटे के साथ ऐसी बहू को देख बेचारी ललिता और श्याम मास्साब अवाक् रह गए. प्रवीण ने गर्व से कहा- ' 'देख लीजिये मेरी तरक्की और अपनी हालत, मेरे ससुर मुझे सरकारी ठेके दिलाते हैं और आज मेरे पास सब कुछ है. आप आना जरूर मैंनें शास्त्री नगर में एक फ्लैट भी ले लिया है...... अब तो खुश होंगे आप?

श्याम दुबे ने कहा....... 'कैसे खुश हो सकता हूँ....... तुमने क्या बड़ा काम किया है...... भ्रष्टाचार, बेईमानी...... ये तरक्की है तुम्हारी....... तुम्हें इस पर गर्व हो रहा है और मुझे तो अपने आप पर शर्म आ रही है...... तुमने हर जगह झूठ बोला है......

अब छोड़िये पिताजी....... मैंने एक कोचिंग सैन्टर भी खोला है पास कराने, अंकसूची दिलवाने की सब सैटिंग है आप तो बस वहाँ मालिक बनकर 12 से 5 बजे तक बैठिये....

अपने बेटे की नीचता से काँप उठे थे एक सिद्धान्त प्रिय शिक्षक...... उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा- 'मेरी ईमानदारी खरीदने आया है पापी, तुझे पिता से शिक्षा की खरोद, फरोख्त की बात करने की हिम्मत कैसे हुई? बेशरम औलाद है तू हमारी..... ठहर बताता हूँ तुझे........ ? कहकर श्याम मास्साब घर के भीतर चले गए.

शिक्षक रहते वे अपने बिगड़ैल शिष्यों को जिस छड़ी से पीटा करते थे. आज वे अपने बेटे को उसी छड़ी से इतना पीटना चाहते थे....... वे तेजी से छड़ी लेकर बाहर आए और गुस्से में कॉंपते हुए चीखकर बोले- बेईमान इधर आ, आज मैं तेरी खाल उधेड़ दूंगा...... अधर्मी, नीच, संस्कारहीन...... आज मैं तुझे नहीं छोडूगाँ....... आज तू अपने ही बाप के पास आया है दुष्ट शिक्षा का व्यापारी बनकर ...... गुस्से में चीखते हुए श्याम मास्साब घर के गेट तक दौड़ते हुए पहुंचे तब तक प्रवीण कार में बैठ चुका था. छड़ी मास्साब के हाथ से नीचे गिर गई थी और मास्साब ने फिर छड़ी उठाने का प्रयास भी नहीं किया . चुपचाप वहीं गेट पर खड़े रहे....... प्रवीण की कार आँखों से ओझल होती जा रही थी.

क्लास by बड़े भाई

# पड़ोस में चल रहे युद्ध से लें यह दो संदेश

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

**आज** वैश्विक हालात किस तरह हो गये हैं इससे हम सभी परिचित हैं. चारों तरफ अनिश्चितता और एक डर का माहौल बना हुआ है. अख़बार और टीवी चैनल में बंदूक मिसाइलें हमले धमकी यही सब सुनाई दे रहा है. ऊर्जा संकट मंडरा रहा है. आजकल हम सब यही देख सुन रहे हैं.

छोटे भाई, मध्य पूर्व में चल रहे युद्ध का भविष्य क्या होगा या कब तक इससे बाहर आएगा यह पता नहीं लेकिन यह समय मेरी दृष्टि में पूरी दुनिया के सामने दो संदेश दे रहा है.जिसे हम जितना जल्दी आत्मसात कर लें, उतना अच्छा.

साथियों सबसे पहला जो संदेश हम इस चल रहे युद्ध से ले सकते हैं वो यह है कि हम यह समझें कि जब पड़ोस में कुछ भी ठीक नहीं रहता तो उसका प्रभाव उन पर भी पड़ता है जिनका इससे कोई संबंध नहीं है. जैसे यह युद्ध जिन देशों के बीच चल रहा है, आप बताइए क्या बस वही देश इससे प्रभावित हो रहे हैं. क्या हम लोग परेशान नहीं हो रहे हैं. हमारे यहां हो सकता है बम बारूद नहीं गिर रहा हो लेकिन उसकी वजह से हम बहुत कुछ झेल रहे हैं. तो हमें सीखना चाहिए कि हमारे पड़ोस में जो भी होगा उसका प्रभाव आसपास भी होगा. अच्छे माहौल से सब अच्छा रहेगा. अगर कुछ बुरा होगा तो नुकसान सबका होगा. इसलिए हम सब अच्छे, और प्रेम को बढ़ावा दें. एक दूसरे का सम्मान करें तभ उन्नति होगी. झगड़ा, द्वेष कभी भी किसी भी तरह उन्नति का आधार नहीं हो सकता.

छोटे भाई, दूसरा संदेश जो हम मौजूदा हालातों से ले सकते हैं वो है बचत के साथ चीजों का उपयोग करने की. देखिए, गैस और तेल के संकट की चर्चाओं ने हमें किस कदर डरा दिया है और यह सब युद्ध के मात्र एक हफ्ते ही हुए हैं. कुछ देशों में अब इस संकट से निबटने के लिए किस तरह के तरीके अपनाए जा रहे हैं आप देख सुन ही रहे होंगे. सब कुछ सीमित उपयोग करने की विनती की जा रही है जिससे हम इस कठिन समय से उबर सकें. हमें इससे संदेश लेना चाहिए कि हम चीजों की कीमत समझें. जब तक होता है तब तक अधाधुंध दुरुपयोग करते हैं. हमें सादगी पूर्ण जीवन ही जीना चाहिए. यह अभाव में जीने की बात नहीं है लेकिन मितव्ययता की आदत हमें किसी का भी दुरुपयोग या फिज़ूल दोहन से बचाती है. यही समृद्धि का सबसे कारगार तरीका है. बचत के साथ उपयोग.

तो छोटे भाई, यही दो बातें हमें इस चल रही विश्व आपदा से सीख के तौर पर लेना चाहिए और अपने छोटों को समझाना चाहिए. ईश्वर करे, सब जल्दी ठीक हो, सब मंगल हो. इसी कामना के साथ. धन्यवाद.

# घर-परिवार की संवेदना उकेरने वाली लघुकथाएं

पुस्तक चर्चा

ज्योति करजगांवकर

**'छाँव जैसी औरतें'** लघुकथा संग्रह के लेखक पवन शर्मा हैं. इस संग्रह में कुल 66 लघुकथाएँ शामिल हैं. पवन शर्मा ने घर, परिवार और समाज में महिलाओं की परिस्थितियों का सूक्ष्म अवलोकन करते लघुकथा संग्रह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया. 'छांव जैसी औरतें' यह नाम ही उजागर करता है कि लेखक समाज में महिलाओं की उन्नति और प्रगति के पक्षधर हैं. इसके अतिरिक्त इनकी लघुकथाओं में सामाजिक चेतना, भावनात्मक गहराई, मानवीय संवेदनाएं, तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है. संग्रह की सभी लघुकथाएं आधुनिक समय के सामाजिक जीवन की समस्याओं पर सकारात्मक परिणाम के भाव से ही लिखी गई हैं.

लघुकथा 'छाँव जैसी औरतें' में आरव का यह कहना कि 'अम्मा सिर्फ रोटी सेकने के लिये नहीं थी, वरन पूरी दुनिया को थामे थी.' स्त्री अस्तित्व के महत्व को प्रकट करता है. वहीं 'गंगा बुआ' लघुकथा शहरीकरण के नकारात्मक प्रभाव को दर्शाती है, जिसमें गंगा बुआ का नदी के बिना मछली की तरह तड़पना उनका प्रकृति प्रेम और उस पर निर्भरता का सूचक है .इसी तरह लघुकथा

'अनजाने अपने' और 'जब वे मुस्कुराई' स्त्री के अंजान भय और अकेलेपन से जूझती दिखती हैं.वही 'सिर्फ औरतें नहीं है वे' नारी सशक्तिकरण की मिसाल है, जो समाज को सकारात्मक दृष्टि और प्रेरणा देती हैं. 'चांद का दूसरा रूख' जहाँ कामकाजी महिलाओं के जीवन के अदृश्य संघर्षों, जटिलताओं और पारिवारिक असंतुलन पर प्रकाश डालती है, वहीं 'पछतावे की कीलें' पति-पत्नी के रिश्तों में विश्वसनीयता बढ़ाने की बात करती है. इस संग्रह में कुछ ऐसी मनोवैज्ञानिक लघुकथाएँ हैं, जो मानसिक उद्वेलन, अकेलापन, अस्वीकार्य और संवादहीनता के घेरे में घिरी होकर भी उस स्थिति से उबरने की कोशिश करती दिखती हैं, जो अनेक पारिवारिक अनसुलझे मुद्दों पर सुलह की आवश्यकता दर्शाती है.

इसमें कई बार यथार्थवाद और विभिन्न सामाजिक प्रवृत्तियाँ मुखर हुई हैं. जैसे लघुकथा 'दीवारें रोती हैं' भावनात्मक दूरी को दर्शाती हुई एक परिपूर्ण घर में उदासी का प्रतीक है. वहीं 'डूब की जमीन' विस्थापन से उठी मानवीय पीड़ा और संवेदनहीनता को चित्रित करती है. लघुकथा कथानक' पन्नों के आंतरिक द्वंद्व, असुरक्षा और खुशियों की तलाश से जीवन मूल्यों पर उठे प्रश्न हैं. वहीं लघुकथा 'शंख की आवाज' दार्शनिक विचार, आत्म चिंतन और जीवन के अनुभवों को गहराई तक महसूस कराने में सफल रही है. 'अपने हिस्से की सांसे' पितृसत्तात्मक परिवार और लैंगिक आधार पर किये जाने वाले भेदभाव और असमानता पर व्यंग्य है. 'रिहर्सल' एक मार्मिक और प्रतीकात्मक लघुकथा है, जो असल जीवन व रंगमंच के बीच के अंतर को प्रस्तुत करती है. 'कमरा नं -5', 'किराया अभी बाकी है', 'मृत्यु की चिट्ठी' जैसी लघुकथाएँ भावनात्मकता के साथ आर्थिक चुनौतियों का सामना, शहरी जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को चित्रित करती है.

'कुर्सियों के पीछे' में निर्जीव वस्तुओं का मानवीकरण कर उपेक्षा के दर्द और अस्तित्व के सवालों पर प्रकाश डालती है.वही 'भविष्य की राख' निराशावादी समाज में स्वतंत्रता और सकारात्मक बदलाव लाने का एक प्रयास है तो वहीं 'स्क्रीन के उस पार' डिजीटल दुनिया पर लिखी लघुकथा है. सच्चे और सार्थक रिश्तों तथा साफ इरादे और विश्वास की नींव पर बुनी गई है. 'डिजिटल रुहें' कृत्रिम बुद्धिमता का मानवीय भावनाओं पर प्रहार के रूप में प्रेषित की गई लघुकथा है.

आधुनिक समकालीन लघुकथाओं में इनकी 'अंधेरे के पार', 'खोये हुये चेहरे', 'कागज की नाव', 'वक्त या जिन्दगी' वर्तमान परिस्थिति की आवश्यकतानुसार लिखी गई है. 'कागज की नाव' का आशावाद बहुत ही दिल को छू लेने वाला है. छोटे बच्चे के सपनों व संघर्षों के पर बुनी गई यह लघुकथा बहुत मार्मिक है - बच्चे का यह पूछना- 'पुस्तक में माँ जैसा कुछ है' जवाब में 'हाँ.' माँ जैसे कथानक हैं.

ये लघुकथाएँ निस्वार्थ प्रेम, पारिवारिक मूल्य, सहानुभूति, व्यक्तिगत आचरण से लेकर जीवन के नैतिक मूल्यों, सामाजिक बुराईयों, राजनीतिक हथकण्डे, बेरोजगारी तथा बदले की भावना दिखाती अनेक भौतिकवादी, दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक हैं. लघुकथाओं की भाषा सरल, सहज प्रवाहमयी और आम बोलचाल की भाषा है, जो हृदय को सीधे स्पर्श करती है.संवाद बहुत प्रभावी हैं, जैसे - 'लोग अंधे, बहरे और मूक हो गये हैं.' बढ़ती संवेदनहीनता पर कटाक्ष है. 'घुप्प अंधेरी सुरंग' या 'मरुस्थल से.', 'शहरों में आ गए.' जीवन की नीरसता, अनिश्चितता और अलगाव को प्रभावी ढंग से पाठक तक अपना उद्देश्य पहुंचाने में सक्षम हैं. पवन शर्मा की लघुकथाएँ पाठक को विषय की गंभीरता पर विचार करने और घर परिवार की आम घटनाओं पर तीक्ष्ण दृष्टि से उन्हें विशिष्ट स्थान प्रदान करती है.

**छाँव जैसी औरतें ( लघुकथा-संग्रह )**
**पवन शर्मा**
**मूल्य-249 रुपए**
**प्रकाशक - बोधि प्रकाशन, जयपुर**

# लघुकथाएं

## उड़ान

रानी प्रियंका वल्लरी

**श्रुति** सुवर्णा को मिलने के लिए पास के कैफ़े में बुलाई थी! दोनों बहनों की बातों में समय का पता ही नहीं चला. श्रुति ने कॉफी के एक घूंट मुंह में भरते हुए,मन में दबी घूंट निकाल दी. 'दीदी एक ही बिल्डिंग में हम सब रहते हैं पर एक मुद्दत हो गई मिले हुए '

'मुद्दत...!कमाल करती हो बहन ! 'पिछले दिवाली पर ही तो मिठाई और तोहफ़े लेकर तुम सबसे मिलने आई थी 'क्या बताऊं.... 'घर से दफ्तर दफ्तर से घर ' बाकी के समय घर में सबको थोड़े थोड़े वक्त देने में कब सुबह से शाम हो जाता पता तक नहीं चलता.

अपने तक के लिए समय निकालना आसान नहीं होता! बड़ा मुश्किल होता हैं. इसमें कहां अपना या कोई अपने याद तक आते हैं. सुवर्णा ने लंबी साँस खीचते हुए बोल पड़ी.

'वो कहते हैं ना औरत काम से काम पर लौटती हैं .

दीदी यह तो अच्छी बात हैं. यह आपकी काबिलियत हैं जो हर काम को संभालती हैं .आज वही स्त्री सक्षम हैं .जो हर जगह अपना जगह बनाना जानती हैं. नहीं श्रुति सिर्फ स्त्री ही नहीं. 'आज पुरुष भी हर एक काम में सक्षम हैं ' वो रसोई और दफ्तर सब संभालते हैं. साथ में आत्मनिर्भर भारत हैं. स्वामी जी ने कहा था, 'एक पंख से चिड़िया उड़ान नही भर सकती ' उड़ने के लिए तो पंख दोनों होने चाहिए.

श्रुति सुवर्णा की बात सुन कर मन में ना जाने कितनी आकांक्षाए लिए लम्बी घूंट लेकर कैफ़े से बाहर निकल आई.

मेघा राठी

आज सोच रही हूँ, अगर कोई मुझसे पूछे कि तुम उससे प्रेम क्यों करती हो, तो क्या जवाब दूँगी?

क्या कहूँगी कि वह असाधारण है? नहीं.

क्या कहूँगी कि उसने मेरे लिए दुनिया बदल दी? यह भी नहीं.

सच तो यह है कि उसने मेरे लिए कुछ भी नाटकीय नहीं किया. उसने पहाड़ नहीं हटाए, समंदर नहीं पार किए .उसने बस मेरे साथ चलना चुना — बराबरी से, बिना मुझे पीछे छोड़े, बिना मुझे आगे धकेले.

वह बहुत साधारण है. सुबह उठकर वही चाय, वही अख़बार, वही दफ्तर की भागदौड़. लौटते समय सब्ज़ी लेते हुए दाम पर मोलभाव करना. महीने के अंत में हिसाब जोड़ते हुए माथे पर हल्की रेखाएँ. उसकी ज़िंदगी में रोमांच कम है, जिम्मेदारियाँ ज़्यादा.

पर मैं जब उसे देखती हूँ तो मुझे उसके चेहरे पर थकान से ज्यादा ईमानदारी दिखती है. मुझे याद है एक शाम मैं बहुत टूटी हुई थी. वजह बड़ी नहीं थी पर भीतर का बोझ बहुत था. मैं बोलती जा रही थी, उलझी हुई, बिखरी हुई, शायद कुछ अनुचित भी. वह चुपचाप सुनता रहा. बीच-बीच में उसकी भौंहें सिकुड़तीं, जैसे सब समझ नहीं पा रहा. पर उसने मुझे रोका नहीं. न कहा कि 'इतनी सी बात है.' बस अंत में इतना कहा, 'तुम थक गई हो.' उसने मेरी समस्या हल नहीं की पर उसने मेरी हालत पहचान ली और कभी-कभी, पहचाना जाना ही सबसे बड़ी राहत होता है. वह मुझे प्रभावित करने की कोशिश नहीं करता. उसे पता भी नहीं कि प्रभाव कैसे डाला जाता है. वह बस अपना होना जीता है. उसके पास प्रेम जताने के बड़े तरीके नहीं हैं. पर वह यह याद रखता है कि मुझे गुलाबजामुन पसंद है . वह यह देख लेता है कि मेरी आवाज़ में आज थोड़ी थकावट है.

उसकी यह छोटी-छोटी सावधानियाँ मेरे लिए किसी बड़ी घोषणा से कम नहीं.

कभी-कभी मैं सोचती हूँ, अगर वह थोड़ा और चमकदार होता, थोड़ा और महत्वाकांक्षी, थोड़ा और अभिव्यक्त — तो क्या मैं उससे ज़्यादा खुश होती? शायद नहीं. क्योंकि उसकी चमक कम है, पर स्थिर है. उसकी महत्वाकांक्षा सीमित है, पर उसमें हम शामिल हैं. उसकी अभिव्यक्ति कम है, पर उसका व्यवहार स्पष्ट है.

## प्रेम, अकारण नहीं

उसने मुझे ऊँचाइयों का वादा नहीं दिया, पर गिरने की इजाज़त भी नहीं दी. उसने मुझे कहा नहीं कि 'तुम सबसे अलग हो,' पर उसने कभी मुझे सामान्य कहकर छोटा भी नहीं किया. मैं उसके साथ अभिनय नहीं करती. मुझे मजबूत बने रहने का नाटक नहीं करना पड़ता. अगर मैं चिड़चिड़ी हूँ, तो वह इसे मेरे स्वभाव की स्थायी परिभाषा नहीं बनाता. अगर मैं रोती हूँ, तो वह मुझे कमजोर नहीं कहता. उसके पास समाधान कम हैं, धैर्य ज़्यादा है और धैर्य आज के समय में दुर्लभ है.

लोग पूछते हैं, 'इतना भी क्या है उसमें?' मैं सोचती हूँ, कैसे समझाऊँ कि प्रेम हमेशा कारणों से नहीं होता. वह किसी की उपस्थिति से होता है. उससे होता है कि जब रात के दो बजे अचानक डर लगे, तो कोई बगल में साँस लेता हुआ मिले. उससे होता है कि जब दुनिया थोड़ी कठोर लगे, तो घर का दरवाज़ा खुलते ही कोई परिचित शांति मिल जाए. वह मेरे जीवन का नायक नहीं है. वह मेरे जीवन का आधार है और आधार अक्सर दिखता नहीं .वह बस होता है — चुपचाप, अडिग. मैं उसके प्रेम में डूबी नहीं हूँ. डूबना अस्थिर होता है, उसमें घबराहट भी होती है.

मैं उसके प्रेम में बसी हूँ. जैसे कोई घर में बसता है — दीवारों की आदत हो जाती है, रोशनी की दिशा पहचान में आने लगती है, और खिड़की से आती हवा अपनेपन की लगती है.

हाँ, वह साधारण है.

पर उसके साथ मेरा जीवन असुरक्षित नहीं है. और शायद एक स्त्री के लिए सबसे बड़ा असाधारण यही है कि उसे कहीं लौटने की जगह मिल जाए जहाँ वह हर रूप में स्वीकार हो.

कविताएं

## दो कविताएं

प्रिया वर्मा

ऐसे मिलती है एक की कहानी से दूसरे की कहानी
जैसे एक की छाया पर गिरती है पराई छाया
पहले पांव के पीछे चलता है जैसे दूसरा पांव
दिन पर चढ़ता है अगला दिन
गए हुए साल पर चलता है यह साल
जैसे कर्ज़ पर ब्याज़ चढ़ता है
जैसे कैलेण्डर के छह पन्नों पर बीत रहा है यह सातवां पन्ना
पन्ना पीछे पलटता है
पर बना रहता है
किसी न किसी परछाई का अंधकार.
बचा रहता है तिलिस्म का पन्ना
मिटती रहती है जगह
कदम दर कदम
कहानी दर कहानी
जैसे प्रतिमा पर उग आई काई जब तेज़ चाकू से खुरचो
तो पत्थर में सूरत दिखने लग जाए
मगर पत्थर पर बनी सूरत की कहानी भी दिखे
मजाल नहीं
मूर्ति की कहानी
किसी की समझ नहीं आती
जैसे सामान पर बैठती गर्द की
कहानी किसी को नहीं सुहाती

2

वह बताता है छिटपुट-छिटपुट उन नन्हों को
जो अब घास के तिनकों की तरह बेतरतीब
और बेतार के तार की तरह
मुझसे जुड़े हैं
इस तरह कि उन्हें भी नहीं है पता कि उनको किससे जोड़ा गया है
और उन्हें किस से जुड़ना चाहिए
वह भरता जाता है उनमें ज़माने की हवा
और भट्टी की आंच पैनी धौंकनी से तेज़ करता जाता है
वे गर्म हवा के गुबार में उड़ते रंगीन गुब्बारे नहीं
मेरी संतानें हैं
जिन्हें वह सिखाता है नीर-क्षीर विवेक के नाम पर खीर और
फिरनी का भेद
मैं कांपती हूं
भय और कातरता से नहीं
अपने भविष्य की संतानों से


संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी